

and the second of the second o

त्र्रभर्ति स्वाः न क्षाः न क्षाः न्यून्य तक्ष्यत्रत् केन्युन्द्रितः नीयरणप्रकाशि त्रं क्ष्मणकर्वक्षणता विधानिता B विभागित्र देशिवितातात्रियातपृथात्या । र्डिप् रियन्तिमारी सं कृष्तिवृक्ष्यक्षियेरीक्ष्यप्रदेशको देशः तत्र विभागित्र व कर्त्या क्ये हो प्रमार्थ वेष्णक्षित्या विसं इत कुत्रदेष्ट्र कार्क्षित्या देवत हता तर्तिक्षे वेरकेवक्ष्ण्याको वस्य वेष्णत्तामहत्त्व वद्रात्री विविध्ये

निवृद्धः मून् पर्या उरित्री केषरमानुर्धानमीममिनातपु प्रथाति केष्युवानम् अभिन्ति सम्भरदित चेता. बुत्र केष्रभूत् समानम् मत्री वेषा भर्ते. 132 किर्तिस्मार्त्यवन्त्रमान्त्रवन्त्रमान्त्र प्रक्षेत्रकृताः नेवा अर्गः भूवा द्वाः भर्षा परिवास्त्रित्त्र विक्षेत्र विक्रेत्र विक्षेत्र विक्रेत्र विक्षेत्र विक कुरियों के किरायस्था विश्व है किरायहरूका या वी देराताका रहा उत्तर्भ ही यक्षेत्रीता में विद्य क्षाय के द्राया विद्य क्षिय के क्षिय क्ष्य क्षिय क्ष्य क्षिय क्ष्य क्षिय क्ष्य क्षिय क्ष्य क्षिय क् 

न्तरा वरीनात्रमन्त्रे कुरायतु वक्रमत्रम्भेनत्र वर्त्त्रम्भेत्रावन्त्रम्भेत्रवेत्त्रम्भेन्यम्भा वर्षम् । वर्षम् विकास सम्बद्धी तकेवतत्त्रमूर्य किव्य तक्ष्मतिपृष्ट्यर्स्य एक्ष्यवक्ष्रेतण्य क्ष्मानक्ष्यक्ष्मक्ष्मक्ष्मक्ष्मक्ष्मक्ष्म वर्षात्र वर् क्ष्रियक्तर्त्यान्तर्द्र्यम्त्रविक्ष्यत्वाक्ष्यक्ष्यक्ष्या द्वात्त्रात्त्र क्ष्यात्त्रात्त्र क्ष्यात्त्रात्त्र TO WAY जूरतम्भितको अञ्चलको रचा कर्यानवृत्दिरक्षर्यन्ति तका अति सक्लक्षर्रम्थलक्ष भित्यतिकारते वृत्यस्य वृत्यस्य वित्यस्य 

70% युवार्ष्युवार्षः स्टार्ट्युकाणकर्याव्यास्य स्वात्रस्य यसअउद्धा भारतियुद्धार्थियाम् स्वाप्ति स्थाः मन्त्र यश्याः मञ्ज्ञाम्यः मञ्जानम् ्। त्रेर्"र्हराक्रिक्ष्या व्या Lines. 7,871. रिद्धवता त्रकेषी निर्वेश सह....लुव.१व...लेव. क्या वश्चारा. नेया चारियाद्रीतं कंदितक्षक्ष्यक्षाक्ष्यके वस्तित्व र्वायभर्वः हर्षणण यवगानण 一大大型一部一部一部一 देशक्रायकेंक्स्यंद्वित यशका

त्र वर्त्रा निक्रमार् केर्य वर्ष्ट्र केर्य प्रत्या सारक्षे केर्य केर्य केर्य वर्ष्ट्र केर्य क्ष्य केर्य केर त्तराउद्धित्या ज्यून्युचारा द्वाराज्याया द्वाराज्या द्वाराज्या व्याराज्या व्य में तार् केत्राव्यव्या क्ष्यां त्रित्यार्था क्ष्यां वेत्रकृत्यार्था क्ष्यां प्रत्या क्ष्यां व्यक्तार्था क्ष्यां वेत्रकृत्या क्ष्यां वेत्रकृत्य क्ष्यां वेत्रकृत्या वेत्रकृत्या

तिया दिलार अध्याद्वासाय प्राप्त के स्था हात्या स्थित । जत्ये द्वाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय । स्थाय स कुषश्रित्वार्वित्वार्वारम्भिक्षत्वे विदेश्य विदेश्या किल्लान्य विदेश्या विद्या विस्थान्य महिक्यान्त्र मान्त्र मान्त्य मान्त्र मान्त्र मान्त्र मान्त्र मान्त्र मान्त्र मान्त्र मान्त्य द्शा न्यमुक्ता विद्यत् व्याप्त व्याप्य व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्य न्तिकू त्त्रिक्शिक् मेर्ना हुनी त्वानक्रक्ष्य प्रत्रिक्ष क्ष्यान क्

क्रिक्रिक्य विद्यां त्रियां त्रियां विद्यां वि हैं द्वारा रेश्वर्रको दे यो शुर तल्लर्वाबुर्क दुवक्षेत्र हैंदर्गूयार्ट्र विस्त्र चित्राक्षेत्र क्रियार्थ्य देवल्या विस्तर्भा क्रियार्थ्य विस्तर्भा विस्त्र्ये विस्तर्भा विस्तर्भा विस्तर् मुं दि वहीय तक्षेत्रतपृष्टि कूर्यास्वर्भायत्रदक्षिणक्षेत्रकृत्यत्ववृत्त्वस्थात्रस्थात्रमान्त्रकृति देवत्यात्रमान्त्र देवत्यात्वात्र क्षेत्रमान्त्र क्षेत्रमान्त्र क्षेत्रमान्त्रम

कियोगं नेत्री शर्थाक्षेत्री कुर्तं नेत्री पर्दृतं संक्षेत्र्युक्त्ये परावां संदेशक्ष्येत्रा परावां संदेशकार्य संदेशकार्य परावां संदेशकार्य परावां संदेशकार्य परावां संदेशकार्य संदेशकार संदेशकार्य संदेशकार संदेशकार संदेशकार्य संदेशकार्य संदेशकार संदेशकार्य संदेशकार्य संदेशकार संदेशकार संदेशकार्य संदेशकार स क्री क्ष्यां क्रियों क्या विश्व क्षित्र विश्व क्ष्यां क्ष्य मि सम्बिद्धिक्ष्यत्तर्विक्षक्ष्यात्रम् विक्षक्ष्यात्र हेत् क्षेत्र स्वत्यात्र विक्षि क्षियात्र क्षिया क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्य अक्रीदेतक्ष्मकुषा कृति त्या प्रतार्वमूर्या दिवस्थान्यकिया स्थितं ता चरित्रां त्राक्षियता एट्सिया दिव्येत्वर्था क्ष्यां स्थानिया दिव्यक्ष्या स्थानिया स्थानिया स्थानिया विस्थानिया दिव्यक्ष्या स्थानिया स्थानिया स्थानिया विस्थानिया दिव्यक्ष्या स्थानिया स्थानिया स्थानिया विस्थानिया दिव्यक्ष्या स्थानिया स

कि तथा विश्वित्यक्षण्यात्रेत्व भूत पिक्रवत्यक्ष्वपृथित्य भूतारां. को कृषा र्थत्त्रभूत वस्तान्त्रेत्र वस्त्र विश्वत्यक्षण्यत् वर्षा वर वर्षा वर्ष है हिंथा थी देने. नर्तेमणवर्षियत रितिस्वेत्री भूका मिता विद्या प्रमाश्वित कुर्या मिता क्षेत्र के क्षेत्र क्षेत्र के क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र कष की अध्यात्रवृष्ट्र में त्या के में त्या के में त्या के मार्थिय के कि में त्या के के में त्या के में त् हैं विभवद्यविकार्द्यम्ववृत्ये के क्रायद्वित्यतिक्षण किर्ततिरित्व किलाविकार्त्रत्यविक्षेत्रण लद्रत्या निर्वित्यत्या निर्वित्यत्यत्यत्यत्या निर्वित्यत्यत्या निर्वित्यत्या निर्वित्यत्या निर्वित्यत्या निर्वित्यत्यत्या निर्वित्यत्या निर्वित्यत्या निर्वित्यत्या निर्वित्यत्या निर्वित्यत्या निर्वित्यत्यत्यत्य में किंद्र में में निक्ती निकार्त केंक्यूका विद्याय किंदियों लिया का केंक्यू किंद्र किंद्र किंद्र किंद्र निकार के विकार कि कि किंद्र कि

की जुलपरवर्षमानकी दूर्व हे हे रहा वाता तार्वा तार्वा देववूनकी दिशानहरे. नंदहरूमा देवेशाया थी तिरात्तर पंच वश्वमान्या विशेष वर्ष वार्षेष नंदह त्यात्रात्रात्रां महिष्या वर्षा क्षेत्रविष्यात्र वर्षा क्षेत्रविष्या क्षेत्रविष्या क्षेत्रविष्या क्षेत्रविष्या वर्षा क्षेत्रविष्या वर्षा वर्षा क्षेत्रविष्या वर्षा वर्षा क्षेत्रविष्य वर्षा वर्ष त्त्रम्ताः विद्याः देवी विमान्त्र प्रदेशका प्रदे 

है जिसमाधिमालयों चूर्ता वर्ता दे देरमाश्रम्भ वर्त्यां देशनिया लूप्टियें रेटब्बुवलसम्मार्थी मूचीयों नरवक्तिव्यू दूरिक्चियं सर्त देश सेर्य क्रियं क्रिय के दियां वर्षक्रम वर्षियां से वर्षायां ता पर बहुद्वाया तार्टितायुर्वा किया स्थापति रक्षेत्रक कर्ष्यक्षियां तार्था वर्षाया वर्षाया तार्थाया तार्थाया वर्षाया वर्षायाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया

जिमीत सरविहरता क्रात्मिता समूर्य समूर्य समूर्य पहूरा पहूरा संदूष्टिवषुश्ववहूर्यना थुरा जिम्मा संदर्भ तर्थ नेश्वर मुन्य प्रति संदर्भ वहूर्य समूर्य स्था पर्य नेश्वर स्थान प्रति स्थान प्रति स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान क्रिक्म वर्षेत्र निर्मा कुर्यक्षित्तक मारे अग्रिम्यक्षित्रक्षित्वत्र क्षित्त्वत् क्षित्वत् क्षित्वत् व्याप्तिक्ष्य किर् कुर्याकृतिकाम्बाक्ष्यकाम्बाक्ष्यकृतिर्द्धवत्त्रवृत्त्र महत्त्र मह 

दे दिनात्त्रम् विश्वास्त विश्वास्त में विश्वास्त में विश्वास्त के विश्वास के विश्वस के विश्वस के विश्वस के विश्वस के विश्वस के वि में त्यारेशा चीर्ती ज्यारेण क्षेत्रकारकार्यकों लिये तारेश चर्द कर्य विविद्ध जालीला ट्रेशियां स्थित स्थित क्रिये क्षेत्रकार स्थित क्रिये क्षेत्र देश क्षेत्र स्थित क्षेत्र देश क्षेत्र स्थित क्षेत्र स्थित क्षेत्र स्थित क्षेत्र स्थित क्षेत्र स्थित क्षेत्र देश क्षेत्र स्थित स्थित स्थित स्थित क्षेत्र स्थित भू ति अविश्वमत्मात्तर्थिक मित्र विश्व विश्

रिशंस् कृथः । योर्गे क्षिण्यकूवमकैणयर्वतार् । ववमत्त्रवृति निमार्थं ताकृति स्त्रेश परित्रकी सामार्थं नामार्थं स्त्रेश सामार्थं निम्हत्या विस्तर्भाव का द्रामार्थियः भविधित्रत्ववृद्द्वाद्री द्रावित्रः वृद्यादिव्यत्तरवृद्या द्रावर्त्या व्यापा नव् क्षित्रकारक्ष्यक्ष्यद्रित व्याप्तिक्षविद्यम् क्रिद्रमध्यक्षरिकत्रीयं द्रिश्नर वे पर्या मेर्पा मेर्पा हर हर हे विश्व क्रिक्य दे कर जा हर्या निर्धा प्रमान क्रिक्य विश्व क्रिक्य क्रिक्य विश्व क्रिक्य क्रि कियों लुटेब्बुब्बुक्ट्र्यक्ष्य र यर्ष्युक्तार्त् केर्यकारी कर्रयाताह यथात् अर्थक्ष्य भित्रक्ष्य क्ष्य क्ष्य

कि र्यामितार्यर्यम्य विद्या प्रमान्त्री लेक्ना देक्षी र मंशी विशे नेक्यर्तियेशकेषक रियम्प्रमाय विद्या विद्या मित्रा प्रमान विद्या विद्य ते विश्वमा भेटलहरेटववध् कुर्वायक्तिक विश्व विश्व विश्व विश्व क्षेत्र क्षेत क्षे व्यद्धक्रियों स्त्र विद्यों स् विश्वकृत्वन्द्द्रकरवणाच्चरत्वाल्याक्ष्वकृत्यां सर्वेश्यात्वाल्याक्ष्यक्ष्यक्ष्यात्वालया आपरास्त्र स्त्रियां सरविधान्य के वहूर्य हन्ना त्राजूरत्त्र केन्द्रका वश्टरी व्य कार्य रिवाश्चरित्हर करत्ववृद्धी श्रेयन्य वात्ववार्य केन्त्र

मानकी सद्दे मान्य प्रमास का प्रमास का प्राप्त मानका प्राप्त मानका प्रमास के रिव्यान्त्री कुष्यं क्री अत्वूर्मी तथ् अक्ष्येश्री क्ष्यार कर्ष्येश्री क्ष्यान प्रत्या मूर्य क्ष्या 

्चत्रमुद्रिति बेम्म्य त्रिक्ति के वार्ष्ट्री वार्षित विकासित्ताक्षीं ते उद्गिह्द वह द्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स त्री बायुन्नान्त क्यांनेश वश्यक्तका मियत्ये देश त्या नेया विवायक्षेत्र प्रति क्षेत्र त्या क्षेत्र विवायक्षेत्र विवायक्षेत्